

This question paper contains 1 printed page.

Roll No.	:	
Unique Paper Code	:	12137902
Name of the Paper	:	Art of Balanced Living
Name of the Course	:	B.A. (H), Sanskrit, DSE, CBCS
Semester	:	VI
Duration	:	3 Hours
Maximum Marks	:	75

टिप्पणी: 1. इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, परन्तु सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

2. इस प्रश्नपत्र में कुल 6 प्रश्न हैं। इनमें से किन्हीं 4 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सबके अङ्क समान हैं।

Note: 1. Answers should be written in **Sanskrit** or in **Hindi** or in **English** but the same medium should be used throughout the paper.

3. There are **total 6 questions** in this question paper. **Attempt any 4 questions.** Each question contains equal marks.

1. बृहदारण्यकोपनिषद् के आधार पर श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
Discuss the nature of Śravaṇa, Manana, and Nididhyāsana on the basis of Bṛhadāraṇyakopaniṣada.
2. गीता के तृतीय अध्याय के आधार पर सन्तुलित जीवन के लिए 'कर्म -योग' की महत्ता को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
Explain with examples the importance of *Karma-Yoga* for balanced life based on the third chapter of the Gītā with examples.
3. गीता के छठे अध्याय के आधार पर व्यवहार-शुद्धि के लिए 'ध्यान -योग' के महत्त्व का वर्णन कीजिए।
Describe the importance of *Dhyāna-Yoga* for behavioral refinement on the basis of the sixth chapter of the Gītā.
4. गीता के द्वादश अध्याय के आधार पर आत्मोत्कर्ष के लिए भक्ति के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
Explain the importance of *bhakti* for self-realization on the basis of the twelfth chapter of the Gītā.
5. 'योग' शब्द को स्पष्ट करते हुए चित्तवृत्तियों का विवेचन कीजिए।
Explaining the word 'Yoga' describe the *Chittavrittis*
6. योग दर्शन में प्रतिपादित अष्टांग-योग के महत्त्व का वर्णन कीजिए।
Describe the importance of *Aṣṭānga-yoga* as mentioned in Yoga Philosophy.